चौरासीवैष्णववार्तासंगतिप्रकाश

– असित शाह.

दामोदरदास हरसानी आद्य दीक्षित हैं सो उनकी वार्ता प्रथम आनी उचित ही है. गुरुशिष्यको सख्यसंबंध, भगवद्परायणता निभाते भये, उनके चरित्रमें स्पष्ट दीसे हैं, जो श्रीमहाप्रभुजी अरु श्रीगुसांजी दोउनके संग भगवद्वार्ता अरु ग्रंथरचनामें उनको सहयोग है.

ता पाछें कृष्णदास मेघनकी वार्ता है. सो यासों जो दमलाजीकी न्यां इनने हू दीक्षा लेयके श्रीआचार्यजीको जीवनभर संग कीयो है. परि दमलाजीसों इनकी कछु उतरती दशा है सो प्रसंगनमें दीसे है.

ता पाछें दामोदरदास संभरवालेकी वार्ता यासों है जो इनके मार्गमें प्रवेशमें कृष्णदास मेघन निमित्त भये हैं. पहेली बेर श्रीआचार्यजीकों खोजवे दक्षिनमें जाती बिरियां कृष्णदास जब इनसों मिले तब श्रीआचार्यजीके दर्शनकी आतुरता इनहूकों भ. पाछे जब दूसरी बेर मिले तब उनके पाछे पाछे श्रीआचार्यजीके समीप वे हू चले आये !

पद्मनाभदास हू संभरवालेकी न्यां कन्नौजमें रहते. सो श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे हते तब वे सरन आये, तासों अब उनकी वार्ता है.

वाके बाद रजोबा क्षत्राणीकी वार्ता यासों आ है जो जैसे पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजीके घरसों दोय बेर पठा सामग्री फेरि दीनी तोहू श्रीआचार्यजी अप्रसन्न न भये तैसे रजोने दोय बेर श्रीआचार्यजीने घी लेन अर्थ वैष्णव पठायो हो ताकों खाली हाथ फेरि दीनो तोहू रात्रिकों श्रीआचार्यजी प्रसन्नतासों वाकी ला अनसखडी सामग्री, श्राद्ध कीयो ता दिना हू, मर्यादा तोडिके अरोगे.

परन्तु काशीवारे सेठ पुरुषोत्तमदासके ऊहाँ श्रीआचार्यजी मर्यादा राखनी उचित समुझिके श्रीठाकुरजीकों पहले पंचामृत कराई पाछे सेवा पहोंचते. अरु इनकी वार्ता दामोदरदास संभरवालेकी वार्ता उपर कहि आये ताहूकी संगतिमें है. भींजे वस्त्रके संगतें कोरो वस्त्र भींज जाय ता प्रकार संभरवालेके संगतें श्रीआचार्यजीके दर्शनकी आतुरता इनहूकों भ; अरु जब दर्शनको अवसर बनि आयो तब परिवारसहित सरन आये. संभरवाले अरु सेठ पुरुषोत्तमदास दोउनने बडे मंडानसों राजरीतिसों सेवा करिकें श्रीठाकुरजी रीझाये.

परि द्रव्यपात्र जीव ही सेवा कर पावे है ऐसो नाहीं यह जतायवेके लिये अब रामदास सारस्वत ब्राह्मनकी वार्ता आवे है; जो उनको द्रव्यको अरु अपरसको हू अहंकार श्रीठाकुरजीने मिटायो.

अव्यावृत्त व्हैके रामदासजीने उधारो लियो और सेवा कीनी, सो श्रीठाकुरजीने चुकाय दीने, तामें परिश्रम भयो. सो न होय ताके लिये कहा करनो सो गदाधरदास कपिलकी वार्तामें वर्णित है जो धैर्य राखनो परि सेवाके निर्वाहार्थ उधारो न लेनो.

गदाधरदासने भक्ति दृढ होउ ऐसे आशीर्वाद माधवदासकों दीने, सो आशीर्वाद कैसे फलित भयो याको माधवदासकी वार्तामें वर्णन है.

अब अन्य हू व्यावृत्त वैष्णवनकी वार्ता आवे हैं. जा भांति माधवदास श्रीनवनीतप्रियजीके लाक माला लेनके तां द्रव्य कमावे दक्षिनकों गये तैसे ही हरिवंस पाठक कासीतें पटना व्यौपारको जाते तिनकी वार्ता है.

तैसे गोविन्ददास भल्ला है, जो पहले तो सिपागीरी करते, पाछे श्रीगोवर्धननाथजीकी अरु ता पाछे श्रीकेसोरायजीकी परचारगी करते.

जब श्रीठाकुरजीने श्रीआचार्यजीसों कह्यो जो तिहारो सेवक मोकों खिजावत है तब श्रीआचार्यजीने पधारिके गोविन्ददास भल्लाकों समुझाये, परि वे न माने, तब श्रीआचार्यजीने उनकी सेवा छुडवाय दीनी. अरु एक अम्मा क्षत्राणी ही जो श्रीठाकुरजीके कहवेपे श्रीगुसांजीके पधारिके समुझायेतें रोवते रही अरु सेवा करन लागी.

परि श्रीठाकुरजीहू आखरि बालक ही तो सही. सो कबहू श्रीठाकुरजीकों हू समुझावनो परे है. सो गज्जनधावनकी वार्तामें आवे है जो श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजीके समुझायवेतें अलग पलंगडीपे पोढन लागे.

जैसे श्रीठाकुरजीने सयाने होके श्रीआचार्यजीकी बात मानी लीनी तैसे श्रीआचार्यजी आपने हू कबहू श्रीठाकुरजीकी बात मानी है. सो नारायणदास ब्रह्मचारीकी वार्तामें प्रसंग मिले है, जो ज्ञातिमर्यादा लांघके हू श्रीठाकुरजीके कहवेपे आपने प्रसादी खीर अरोगी. ता दिनातें खीर अनसखडीमें होत है.

जैसे श्रीठाकुरजीकी बात आपने मानी ऐसे अपनी सेवकनी महावनकी क्षत्राणीकी बात हू मानिके आपने वाकों आपुने चरणारविन्दकी सेवा पधराय दीनी.

वा क्षत्राणीकों चारि भगवत्स्वरूप स्वयं प्राप्त भये. तामेंते एक गज्जनधावन अरु एक नारायणदास ब्रह्मचारीके माथे पधारे सो प्रकार तो उपर कहि आये. एक स्वरूप जीयदास सूरी क्षत्रीके माथे पधारे सो उनको अरु उनके सगरे परिवारको अंगीकार कीनो.

चौथे स्वरूप देवा कपूर क्षत्रीके माथे पधारे. देवा कपूरकों स्त्रीसहित अंगीकार करिके पाछे पुत्रादिक दैवी न होयवेसों आप उहांते अन्तर्धान भये अरु अन्यत्र भक्तगृहमें प्रकट व्हैके सेवा करवाये.

अब कथा अरु सत्संगके अधिकारिनकी दोय वार्ता हैं. दिनकर सेठ क्षत्री श्रीआचार्यजीके अडेलवास पाछे कथाके मुख्य श्रोता भये.

दिनकरनामवारे अन्य भगवदीय दिनकरदास विरह करिके गद्यमंत्रको अनुसंधान करत प्राप्त भये. तो भा मुकुन्ददास आचार्यवाक्सुधाको पान करत रहते अरु मुकुन्दसागर ग्रंथ भाषामें किये.

मुकुन्ददास चोपड खेलिवेके मिसतें अन्यमार्गीयको संग टारते. परि प्रभुदास जलोटाको घरहीमें अन्यमार्गीयको संग भयो. सो घर छोडिकै श्रीआचार्यजीके पास जाय रहे अरु भजननिर्वाह किये. (गदाधरदासने जैसे भक्ति दीनी तैसे प्रभुदासने मुक्ति दीनी, सो श्रीठाकुरजीके लायक सुंदर सामग्री मिलिवेपे प्रसन्न होके).

उनकी न्यां प्रभुदासनामवारे अन्य एक वैष्णव प्रभुदास भाट रेनुका तीर्थको संग छोडि भगवच्चरणारविन्दमें आ देह छोडे.

उनको निन्दक कीरत चौधरी विष्णुदूतनके मारिवेपे सूधो भयो. परि पुरुषोत्तमदास स्त्री–पुरुष दोउनकी माता तो माला उतरायवेकी हठ पकडि रही सो सगे संबंधी अरु गामके हाकिमके समुझायवेपे हू न मानी, सो क्लेश करि कूवामें गिरि परी.

त्रिपुरदास कायस्थकों तुरक हाकिमने बंदीखाने दिये, सो वाकों कीरत चौधरीकी न्यांई विष्णुदूतनने आयके मार्यो, जब वाने त्रिपुरदासकों बेगि ही छोडि दीने.

त्रिपुरदासकी न्यां पूरणमल्ल क्षत्री हू श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवार्थ उद्यत रहते. त्रिपुरदास बरसके बरस जडावर पठावते अरु पूरणमल्लने मंदिर संवरायो.

पूरणमल क्षत्रीने श्रीनाथजीकी आज्ञा अरु श्रीआचार्यजीकी अनुज्ञासों मन्दिर संवरायो तैसे जादवेन्द्रदास कुम्हारने श्रीगुसांजीके वचन सुनिकें एक ही रात्रिमें श्रीगोकुलमें मन्दिरकी नीम खोदी.

वैष्णव कोमल हृदयवारे होय तासों अन्यपे दया करनो सहज ही है. जादवेन्द्रदासने रुद्रकुंड पास कुंआ खोदि मिष्ट जल सुलभ कीयो तो गुसांदास सारस्वतने आपुने श्रीठाकुरजीकी प्रेरणासों सेवा एक अन्य सेवाकांक्षी वैष्णवकों पधराय दीनी अरु आप देहत्याग कीयो.

माधवभट्ट काश्मीरीने एक गांववारेको मृत बेटा जीवायो. परि रात्रिकों तहांसों गांव छोडि भाजे तब धर्म रह्यो.

तासों परोपकार करवेमें बांसवाडेके गोपालदासकी न्यां चतुरा चहिये. उनने अपने घर पास विश्रामस्थल

बनायो, जहां वैष्णवसों मिलाप होय जातो तो सत्संग सिध्ध होय जातो.

अब नौ वार्ता सांचोरा ब्राह्मन वैष्णवनकी हैं. तामें प्रथम पद्मारावल सांचोरा विश्रामस्थलमें बांसावाडेके गोपालदाससों मिले अरु उनके बतायेतें श्रीआचार्यजीकी सरन आ कृतारथ भये.

गुजरातके पुरुषोत्तम जोसी सांचोरा न पद्मारावलके बेटा कृष्णभट्टके संग भगवद्वार्ता करत उज्जैनतें श्रीगोकुल आये तब कृष्णभट्टपे प्रसन्न भये.

गुजरात ही के अन्य एक जोसी परिवारकी वार्ता अब आवे है. जगन्नाथ जोसी, नरहरि जोसी अरु नकी माता तीन्यों कृपापात्र भगवदीय भये.

गुजरातके राना व्यास सांचोराके पास जगन्नाथ जोसीने पहले दीक्षा लीनी ही. परि श्रीआचार्यजीकी सरन जोसी पहले आये, अरु गोधराके हाकिमसों राना व्यासकों उनने बचाये हू.

जैसे राना व्यासने रजपूतानीकों नाम सुनायके भगवद्सेवार्थ प्रवृत्त कीनी तैसे गुजरातके राजनगरके रामदास सांचोराने स्त्रीकों नाम सुना भगवद्सेवामें प्रवृत्त कीनी.

रामदासकी न्यां गोविन्द दुबे सांचोरा हू द्वारिकामें श्रीआचार्यजीकी सरन आये. रामदासकी न्यां उनसों हू श्रीरणछोडजी बोलते. जगन्नाथ जोसीकी न्यां वे हू गुजरातके खेरालुके वासी हते.

राजा दुबे – माधो दुबे सांचोरा हू द्वारिका ही में श्रीआचार्यजीकी सरन आये.

उत्तमश्लोकदास सांचोरा राना व्यासकी न्यां गुजरातके गोधराके वासी हते.

श्वरदास दुबे सांचोरा उत्तमश्लोकदासके संग ही श्रीआचार्यजीकी सरन आये अरु इनहूको श्रीगुसांजीने श्रीनाथजीद्वार सेवकनकों परोसना करवेकी सेवा दीनी ही.

श्वरदास दुबे सेवकनकों अपनी गांठितें घृत अधकीमें परोसते, जासों सरीरमें बल होय अरु सेवा भली भांतिसों होय सके. सो वासुदेवदास छकडा ऐसे सेवक भये जो बलवान हते अरु सदा सेवार्थ तत्पर रहते. इनके सरन आयवेमें कृष्णदास मेघन निमित्त भये हैं.

श्रीआचार्यजीकी भेटकी मौहोर सिंहनदतें अडेल पहोंचावे लाखको गोला करिके वापे चंदन चढावत वासुदेवदास बैरागीको भेष धरिके चले. पाछे अडेल आके गोला फोरिके भेटकी मौहोर श्रीआचार्यजी आगे राखी. सो श्रीआचार्यजीकों सुहा नाहीं, जो भगवदाकारकों अन्यथा करनो उचित नाहीं. परि देवीपूजक बाबा वेनु, कृष्णदास घघरी, यादवेन्द्रदास खवासकों अंगीकार करनार्थ तो स्वयं श्रीठाकुरजी देवीकी न्यां प्रकट भये. पाछें श्रीआचार्यजीने ठाकुरकी न्यां प्रतिष्ठित कीने.

जगतानंद सारस्वत हू अपने ठाकुर लालजीकों तुलसीमें बैठाये रखते अरु नित्य एक लोटी पानी चढावते, सो श्रीआचार्यजी बरजे, जो ऐसे न करिये. पाछें वाके घर बिराजी सेवारीति सिखा.

आनंददास विशम्भरदासकी वार्ता बाबा वेनुकी वार्ताकी संगतिमें है. श्रीठाकुरजीने जा भांति बाबा वेनु, कृष्णदास अरु यादव खवासकों अंगीकार करवेकी श्रीआचार्यजीसों कही ताही भांति इनहूको अंगीकार करवेकी कही, क्यों जो इनकों बडो ताप हतो.

या वार्तासों लेके गोरजा–समराकी वार्ता तां श्रीठाकुरजी सानुभाव जतावते ऐसे वैष्णवनकी वार्ता हैं. आनंददास विशम्भरदास भगवद्वार्ता करते तामें श्रीठाकुरजीहू हुंकारी देते. तो अडेलकी एक ब्राह्मनी आचार–क्रिया–द्रव्यमें समुझती नाहीं अरु नेत्रनसों हू थोरो दीसतो तो हू श्रीठाकुरजी वाकी प्रीतिके बस हो पास पधारि रोटी अरोगते.

एक क्षत्रानी प्रयागकी हती ताकी लाडूकी हांडी उतारिके श्रीठाकुरजी आपुही लाडू ले वाके देखतहीमें अरोगे.

गोरजा–समरा सास–बहूकी वार्तामें आवे है जो बहूके आगे वाके देखतही नित्य श्रीठाकुरजी अरोगते.

श्रीदामोदरजी ठाकुरजी बहूकी प्रीतिके बस भये तैसे कृष्णोदासीने प्रीतिसों श्रीगुसांजीको परिवार बस कीनो, सो कृष्णो कहे सो हो.

बुला मिश्र सारस्वतकों भगवान पहले ही सानुभाव जताये, सो मुक्ति तो सिध्ध हती. परि भक्ति करिवेके काज वे श्रीआचार्यजीकी सरन आये.

बुला मिश्रने जिजमानके आग्रह करिवेपे हू वाकी पुत्रकामना जानिके वाकों संपूर्ण पुरान न सुनायो. परि रामदास मेवाडा प्रोहितने जिजमान मीराबाके आगे चुकिके श्रीआचार्यजीके कीर्तन गाये, सो रसाभास भयो अरु गाममेंतें कुटुंब लेके उठि चले.

रामदास नामवारे अन्य एक वैष्णव रामदास चोहान रजपूतको याहीसों एकांतसेवाको मनोरथ हतो, सो अकेले श्रीनाथजीकी सेवा करि लीलामें गये.

रामनामवारे अन्य एक वैष्णव रामानंद पंडितकी वार्ता ता पाछे आवे है.

रामानंद ब्राह्मन होयके श्रीआचार्यजीके त्याग करवेपे विकल होके बजारको हू खान लागे. परि विष्णुदास छीपाने सेवक होत ही ज्ञातिमें खानपानको त्याग कीयो अरु श्रीगुसांजीके संग भट्टके यहां गये तहां हू न खाये. अरु कृपाबलसों प्रताप ऐसो जो पंडित वाद करन आवते तिनकों प्रतिउत्तर दे पौरीसों ही विदा करि देते.

जीवनदास क्षत्रीहू ऐसे प्रतापवारे वैष्णव हते जो मेहको श्रीआचार्यजीकी आन दिवा बरसिवो टारे, सो श्रीआचार्यजीकी कृपातें.

भगवानदास सारस्वत हू श्रीआचार्यजीके ऐसे कृपापात्र हते, सो नित्य आपुने घरहीमें श्रीआचार्यजीसों वार्ता करते.

भगवाननामवारे अन्य एक वैष्णव भगवानदास सांचोरा भीतरिया हो सेवा किये.

अच्युतदास सनोढियाके कहवेपे श्रीगुसांजीने भगवानदास सांचोराकों, सेवातें बाहर किये हते सो, बांह पकरिके फेरि सेवामें राखे.

अच्युतनामवारे ही अच्युतदास गौड कृपापात्र भगवदीय भये.

तैसे ही अच्युतदास सारस्वतपे श्रीआचार्यजीकी कृपा हती.

अच्युतदास सारस्वतकों श्रीआचार्यजी नित्य दरसन देते सो वे सदा संयोगरसमें मगन रहते. अरु नारायणदास कायस्थकों श्रीआचार्यजीके दरसनकी आर्ति बनी रहती. सो घरी घरीमें चाकरसों कहते जो हां अब श्रीआचार्यजीके दरसनकों चलूंगो. इनके सरन आवेमें कृष्णदास मेघनसों मिलाप होनो निमित्त भयो.

नारायणदास भाट नारायणनामवारे अन्य वैष्णव भये, तिनकी अब वार्ता है.

अरु ता पाछे नारायणदास लुहाणाकी वार्ता है.

नारायणदास लुहाणापे जब बादशाह कोप्यो तब बंदीखानेमें दीनों अरु पांच हजार रुपैया नित्य भरवेको बंधान बांध्यो. सो कष्ट सहनो पर्यो. करज करिवेसों मन हू श्रीठाकुरजीके सुमिरनमें न रहिके करजवारेनमें जाय है. तासों सिंहनदकी एक क्षत्राणीको श्रीठाकुरजी उधारो करज करि पकवान भोग धरिवेकों बरजे, जो ऐसे न करिये. ता दिनसों उह करज न करती, कांत्यो सूत बेचिके कमाती ता ही द्रव्यसों भोग धरती. श्रीठाकुरजी चुपरी रोटी अरोगिके हू प्रसन्न रहते अरु क्षत्रानीहू मनमें दुःख न करती जो पकवान न धर्यो.

दामोदरदासकी माता वीरबासों हू सिंहनदकी क्षत्रानीकी न्यां श्रीठाकुरजी सानुभाव हते. सो जैसे क्षत्रानीने श्रीठाकुरजीकी आज्ञा मानी तैसे वीरबाने श्रीठाकुरजीकी आज्ञा मानिके तत्सुखविचारसों पिंडरुमें सेवा कीनी. परि मारगकी रीतिसों सुध्ध भये पाछे अपरसहू काढी.

स्त्री–पुरुष क्षत्री सिंहनदके हू श्रीठाकुरजीकी आज्ञा मानिके बरषामें एक रात्रि कोठरीके भीतर श्रीठाकुरजीके समीप धरतीपे सोये. परि दूसरे दिनातें द्वारपे छपरा बनवाय बाहर ताके नीचे सोये, सो मार्गकी मर्यादा राखिवे

काज, जो अनोसरमें लौकिक देहवारेनकों पास आवनो आछो नाहीं. सो श्रीठाकुरजी सुध्ध भाव देखि अनुभव जनावन लागे.

एक सुतार अडेलके हू सुध्ध भाववारे हते. सो श्रीआचार्यजीकी आज्ञा मानिके उनने श्रीआचार्यजीके पास बैठिवो छोडि दीनो अरु आपुने घर रहिके कामकाज करन लागे. परि तऊ वाकी प्रीति ऐसी जो श्रीआचार्यजी एक बार उहां पधारि वाकों दरसन देयके घरी दोय घरी वार्ता चर्चा करि आवते.

एक क्षत्री पूरबके हते वाने आपुने श्रीठाकुरजीकी आज्ञा प्रमान अपने संगी दैवी अन्यमार्गीय ब्राह्मनके घर जायके पाक सामग्री कीनी अरु वाके श्रीठाकुरजीके आगे भोग धरिके आपुने श्रीठाकुरजीकों मनसों बिनती करि. पाछे महाप्रसाद हू लीनो. परि मार्गकी कानि राखिवे सखडी न करिके अनसखडी धरी.

पूरबके क्षत्रीकी न्यां अब कितनीक वार्ता ऐसे वैष्णवनकी हैं जो श्रीआचार्यजीके समुझायवेतें सरन आ कृतार्थ भये. लघु पुरुषोत्तमदास क्षत्री पहले राजा, सेठ आदिके कवित्त करते सो छोडके भगवद्जस बरनन करन लागे. पुरुषोत्तमनामवारे ये चौथे वैष्णव हैं.

कविराज भाट सनोढिया आपुने प्रश्नको उत्तर श्रीआचार्यजीसों पायके सरन आके भगवद्लीला गावन लागे.

गोपालदास टोडा क्षत्री हू श्रीआचार्यजीके समुझायवेतें सरन आये अरु चोखरा गान करि मगन रहते.

जनार्दनदास चोपडा क्षत्री भगवदीय वासुदेवदास छकडाके समुझायवेतें सरन आ कृतारथ भये.

अब कितनीक वार्ता ऐसे वैष्णवनकी हैं जिनकी आधि अरु आर्ति श्रीआचार्यजीके प्रतापबलतें निवृत्त भ. (पहले एक नारायणदास लुहाणाकी वार्ता आय चुकी है, जामें उनके सरीरको रोग श्रीआचार्यजी दूरि कीने हैं. अरु मुकुन्ददासकों सर्पविषबाधा भ हती सो कृष्णदास मेघनने श्रीआचार्यजीको चरणामृत लिवायो तासों दूर भ. तैसे ही नारायनदास कायस्थने लरिकाको मार्यो सो श्रीआचार्यजीने दियो जल छिरकवेतें वाकों सुधि आ. प्रभुदास, अच्युतदास आदिको स्वजनमरणको सोक दूरि करिके श्रीआचार्यजी सरन लिये.) गडू स्वामी सनोढियाको विरहताप भगवद्आज्ञा प्रमान श्रीआचार्यजीके सरन आयवेतें निवृत्त भयो अरु वे मानसीमें मगन हो गये.

कन्हैया शाल क्षत्री व्रजके दरसन करि बावरे व्है गये हते तिनकों श्रीआचार्यजी सावधान किये अरु हृदयमें स्थिर रसानुभवकी पात्रता दिये.

नरहरदास गोडिया ब्राह्मनको जगन्नाथरायजीके उहां मनोरथ करने हते सो भगवन्नाम लेवेमें मन न हतो. सो श्रीआचार्यजीकी कृपातें मनोरथ बेगे ही पूरन करिके सरन आये.

नरहरनामवारे अन्य एक वैष्णव नरहर संन्यासी स्वामीपदमें दुःखी हते सो छुडवायके श्रीआचार्यजी सरन ले कृतारथ किये.

सदु पांडेको परिवार परि ऐसो विलक्षन है जो श्रीआचार्यजी अरु श्रीगोवर्धननाथजी हू की आर्ति टारिके मनोरथ पूरन करे. सो दूध आदि प्रसादी के सीधा–सामग्री, गाय, सेवक; जो जब जो चहियत हतो सो ल्याय देते. ऐसी सेवा कीनी.

गोपालदास जटाधारीको हू जब श्रीआचार्यजीने जो सेवा दीनी सो उनने करी, जो बागकी, पानघरकी, अनोसरमें पंखाकी, आदि.

कृष्णदास स्त्री–पुरुषको श्रीआचार्यजीने आये गये वैष्णवकी सेवा दीनी जो बहोत कठिन है. परि द्रव्यके संकोचमें हू चुके बिना तन मन धनसों उनने कीनी अरु श्रीआचार्यजीको प्रसन्न किये.

संतदास चोपडा क्षत्रीने हू द्रव्यके संकोचमें श्रीआचार्यजीके ग्रंथके अनुसार विवेकधैर्याश्रयतें सेवा निभा परि कबहू चुके नाहीं. सो श्रीगुसांजी सराहना किये.

संतदासकी वार्तामें राजसी सेठने महाप्रसादकी अवमानना करी सो प्रसंग आवे है. तासों सन्देह दूरि करिवे सुंदरदास माधोदासकी वार्तामें महाप्रसादको माहात्म्य जतायो है.

सुंदरदास माधोदासकी वार्तामें जैसे श्रीआचार्यजीने गामके सगरे वैष्णवनको महाप्रसादकी पातरि धरि तैसे बिरजो पटेलने जगन्नाथपुरी ले जाके श्रीगुसांजी अरु गाम गामके सब वैष्णवनकों आपु परोसिके महाप्रसाद भोजन करायो.

कृष्णभट्टकी सहायतें श्रीगुसांजीकी आज्ञा प्रमान बिरजोको मनोरथ पूरन भयो, परि कृष्णभट्टको स्वामीपद न आयो. तासों न उनको बिगार भयो न उनके संगी वैष्णवनको. नरोडावारे गोपालदास क्षत्री परन्तु ऐसे न हते. सो दोय जनेनने तीन बेर बिनती करी तोहू गोपालदासने उनकों श्रीगुसांजी पास नाम न दिवाके आपु नाम देयवेकी ठानी. सो ऐसो स्वामीपद आयेतें उनके नाम सुनाये जीव पुष्टिमार्गतें भ्रष्ट गंगोजवत् भये. तातें भगवदीयनकों राजसतातें डरपत रहनो. गोपालनामवारे ये चौथे वैष्णव हैं.

बादरायनदास पुष्करना स्त्री–पुरुष ऐसे एक वाछवभट्टके सेवक भये हते. पाछे उनने श्रीआचार्यजीकी सरन लीनी अरु कृतार्थ भये.

सूरदासहू पहले स्वामी कहावते. पाछे स्वामीपद छोडि श्रीआचार्यजीकी सरन आ आपुने सब सेवकनकों श्रीआचार्यजीके सेवक कराये. (अगारि गडू स्वामी, नरहरि संन्यासी अरु राना व्यासकी वार्ता हू आय चुकी है, जिनने स्वामीपद छोडि श्रीआचार्यजीसों दीक्षा लीनी ही.)

परमानंददासहू स्वामीपद छोडे अरु आपुने सेवकनकोहू श्रीआचार्यजीके सेवक कराये. जैसे सूरदासको श्रीभागवतकी अनुक्रमणिका सुनाके श्रीआचार्यजी सागर बना दिये तैसे परमानंददासहूको भगवद्लीलारससागर बना दिये.

परमानंददासने बाललीला गा है तैसे कुंभनदासने किशोरलीलाको गान कीनो है.

कृष्णदास अधिकारीहू न तीन्योंनकी न्यां अष्टसखानमें है. कृष्णदास नामवारे वे चौथे वैष्णव हैं. उनने भगवदीय भये पाछे भगवद्च्छातें अधिकारमदमें श्रीगुसांजीको विप्रयोग करवायो सो प्रेतयोनि पा. पाछे श्रीगुसांजीने उनकी बिनती स्वीकारी कृपा करिके प्रेतयोनि छुडवा.

तासों गुरु–शिष्यमें टकराव न होयके दमलाजीकी न्यां सख्य भयो चहिये, जो श्रीगुसांजीकों टोके सो हू शिक्षा देन अर्थ. श्रीगुसांजी हू उनकी दी भ शिक्षा मानत भये. तातें गुरु होय के शिष्य, बडे सो बडे.

शिक्षापत्र–शिक्षाश्लोकी–संगतिप्रकाश

– असित शाह.

सो पहले शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो लौकिक–वैदिक कर्म अनास्थया करने, निरुध्धवचन व्है रहनो, मनसों लीलाभावन करनो, कृष्णदर्शनार्थ क्लिष्ट अरु उद्विग्न मानस रहनो, निरुध्धचित्त व्हैकै सेवा करनी, भार्यादिनमें अनुराग सेवाहेतुक ही राखनो, कृष्णसेवामें अत्यादर राखनो, काया–वाणी–मनसों श्रीआचार्यजीको आश्रय करनो, सद्लक्षणसंपन्न भगवदीयको सत्संग करनो आदि. सो यह सगरो उपदेश शिक्षाश्लोकीमें विकराल बहिर्मुखता दोष बतायो है तासों बचवेके तां अरु भावके संरक्षणार्थ जाननो.

दूसरे शिक्षापत्रमें यह बतायो है जो सेवाके अनवसरमें बुध्धिसों यशोदोत्संगलालित प्रभुको चिन्तन करनो, जासों निरोध सिध्ध होय. सो प्रभु कैसे हैं यह बतानो शिक्षाश्लोकीके ‘‘सर्वभावेन सेव्यः स एव गोपीशः’’को भाष्य है.

तीसरे शिक्षापत्रमें कह्यो है जो भाव निधि है अरु वाको रक्षण अवश्य कीयो चाहिये. सो सत्संगके व्यवधानसों अग्निरूप भगवद्भाव जलरूप संसारको नाश करि सके हैं. कौन संग करिवे योग्य है वाको पहले

निर्णय करिके पाछें ही वाको संग करनो. सत्संग न बनि आवे तब मौन रहनो. लौकिक आसक्तितें डरपत रहनो. यह निरूपण शिक्षाश्लोकीके ''भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्च'' श्लोकांशको भाष्य है.

चौथे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो विरुध्धगुणवारे श्रीप्रभुजीके सरनसों ही सब फलसिध्धि होय है यह जानिके भगवद्धर्मनकों जानिके चित्तमें लोकसंबंधी क्लेश न करनो. लोकमें दुःख अरु क्लेशकों भगवदंगीकारको लक्षन जानिके सत्संग अरु सरनभावन करत रहनो. सो यह शिक्षाश्लोकीके ''गोपीशः विधास्यति अखिलं हि नः'' या वचनको भाष्य है.

पांचवे शिक्षापत्रमें कह्यो है जो भगवद्मिलनार्थ आर्ति बनाये राखनी. अरु लौकिकव्यवहार यथाकथंचित् बनाये राखनो. काहेतें जो लोकमें अपकीर्तिके भयसों बुध्धिशैथिल्य आय सके हैं. सो शिक्षाश्लोकीमें ''बहिर्मुखा भविष्यथ कथंचन'' कह्यो है सो बहिर्मुख होयवेको एक प्रकार बुध्धिशैथिल्य है; सो न होय ताके लिये यह निरूपण है.

छठे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो संसार कृष्णविस्मृतिको कारण है तासों अनिष्ट है. याको निवर्तन पुष्टिजीव स्वयं न कर पावे तो पुत्रको हित विचारिवेवारे पिताकी न्यां पुष्टिप्रभु स्वयं करे हैं. तासों प्रभुकी संसारनाशक कृतिनमें प्रभुको गुण माननो अरु आपुनी दृढ अंगीकृति निश्चय जाननी. सो यह शिक्षाश्लोकीके ''विधास्यति अखिलं हि नः''को भाष्य जाननो.

सातवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो भावकों निधिरूप जानिके सेवा–सत्संग–गृहस्थी सब केवल भाववर्धनार्थ ही करने. भावविरुध्ध जो जना पडे ताको त्याग ही कीयो चाहिये. सो ''भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्चैहिकश्च सः परलोकश्च'' या शिक्षाश्लोकीके वचनको भाष्य है.

आठवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो प्रभु जीवको कल्याण ही करे हैं ऐसो विश्वास राखनो अरु प्रभुमें दोष स्फुरे सो आपुनो ही दोष जाननो. प्रभुके मिलनकी आर्ति राखनी. अन्याश्रय महान बाधक है सो न करनो. यासों तदीयनको संग करत रहनो, नाहीं तो चित्त विक्षिप्त होय जाय है. सो यह निरूपण शिक्षाश्लोकीके ''न लौकिकः प्रभुः कृष्णो मनुते नैव लौकिकम्, सेव्य स एव, विधास्यति अखिलं हि नः''को भाष्य है.

नौवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो हृदयमें भगवानके प्रति प्रेम–आसक्ति–व्यसन होयके प्रपंचस्फूर्तिको नाश होय जानो दुर्लभ है. वामें इन्द्रिय, विषय, लौकिकी मति, भोग, उद्वेग, प्रतिबंध, दुष्टान्नभक्षण, असमर्पितभक्षण, असत्संग आदिकों बाधक जानिके दुःसंगत्याग, स्वाचार्याश्रय, सत्संग, मार्गस्थिति, गुरुसन्निधि, विषयवैराग्य, परितोष आदि पूर्वक भगवद्भजन करत रहनो जासों फलप्राप्ति होय. यामें शिक्षाश्लोकीके ''तदा कालप्रवाहस्था देहचित्तादयोप्युत सर्वथा भक्षयिष्यन्ति युष्मानिति मर्तिमम'' अंशको समुझायके ''सर्वथा सेव्य'' यह उपाय हू समुझायो है.

दसवे शिक्षापत्रमें आज्ञा करे हैं जो विविध आर्ति होवे हैं तिनकों भगवद्दत्त जाननी. निजार्ति, लौकिकार्ति, स्वार्ति, शरीरार्ति, बंध्वार्ति, देशार्ति, साधनार्ति, वैदिकसाध्यार्थार्ति मया सबनकों देवेमें प्रभुनको कहा आसय है सो समुझिके आश्रय न छोडनो. चातकवत् स्थिति करनी. रोगी होय सो तीखे औषधनको हू खाय जाय है तैसे अपने लौकिकार्ति मनमें न लानी. यों विचारनो जो प्रभु सबनके सखा हैं सो भक्तनके क्यों नाहीं होयंगे ? यह निरूपण शिक्षाश्लोकीके ''विधास्यति अखिलं हि नः''को भाष्य है.

ग्यारहवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो जीवकों गुणगान, दुःखभावन, दैन्य अरु त्याग अवश्य किये चाहिये. तासों श्रीभागवतागाहन, सेवा, दैन्यभावन अरु विरहभावन करनें. सो सत्संगसों सिध्ध होय सके हैं. यामें शिक्षाश्लोकीके ''सर्वथा सेव्यः''अंशको समुझायो है.

बारहवे शिक्षापत्रमें श्रीस्वामिनीजीके जल्पित वाक्यनकी भावना सदा करत रहनी यों कही है. सो ''सर्वभावेन सेव्यः स एव गोपीशः'' या शिक्षाश्लोकीके वचनांशको समुझायो है.

तेरहवे शिक्षापत्रमें कह्यो है जो कराल काल आयो है सो सन्मतिकों छिनमें हरि ले है अरु दुःसंगकों सुलभ करि दे है; सो मेरी कहा गति होयगी ? यों आर्ति राखिकें निःसाधन दीनपै प्रभु दया करिहैं ऐसी आस राखिकै प्रभुनकी सरन जायके सब ठौरतें चित्तकों छुडायके श्रीहरिचरित्र हृदयमें धारण करिके सत्संग करत रहनो. सो शिक्षाश्लोकीके ''कालप्रवाहस्था देहचित्तादयोप्युत सर्वथा भक्षयिष्यन्ति युष्मान् इति मतिर्मम'' अरु ''गोपीशः विधास्यति अखिलं हि नः'' वचनको भाष्य है.

चौदहवे शिक्षापत्रमें वैष्णवके लक्षन बतायवे तां लिख्यो है जो प्रभुके दोउ चरनकमल चित्तमें स्थापित करने, जिनके अनुग्रहसों सकल सिध्धि होयगी. अन्याश्रयको त्याग करनो. स्वशरीरादिमें अध्यासरूप दुःसंगको हू त्याग करनो. भगवदीयनसों मिलिके समर्पणको अनुसंधान करत रहनो. श्रीआचार्यजीके चरनकमलको दृढ आश्रय करनो. सो शिक्षाश्लोकीके ''सर्वथा सेव्यः, स एव विधास्यति अखिलं हि नः'' या अंशको व्याख्यान है.

पंद्रहवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो सदा सदानंद प्रभुनको स्मरण करत रहनो जासों सकलार्तिविनाशन छिनमें होय जैहें. सो यह ''गोपीशः विधास्यति अखिलं हि नः''या शिक्षाश्लोकीके वचनको आशय स्फुट कीनो है.

सोरहवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो प्रभु सेवनीय स्मरणीय कथनीय हैं. प्रभु सर्वकर्ता होयवेसों अणुमात्र चिन्ता हू जीवकों न करनी. प्रभु कहा करिवो चाह रहे हैं सो जानि न परत हैं तासों चित्त खिन्न होय जाय है. ऐसी भीति लगे हैं जो कालबलसों सत्संगरहित अरु दुःसंगसहित होयवेसों विषयावेशसों मति श्रीआचार्यजीके आश्रयसों च्युत होयके केवल लौकिकमें कहूं स्थित न होय जाय. ऐसेमें सत्संग करिकें मन ठिकाने राख्यो चाहिये. यह निरूपण शिक्षाश्लोकीके ''कालप्रवाहस्था देहचित्तादयोप्युत सर्वथा भक्षयिष्यन्ति'' अरु ''सर्वथा सेव्यः स एव विधास्यति अखिलं हि नः'' या अंशनको भाष्य है.

सत्रहवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो मार्गमें दृढ स्थिति करवे तां श्रीआचार्यजीके कहे प्रमान गृहधनादिनकों कृष्णमें लगाने, वैराग्य–परितोष–सत्संग बनाये रखने, विषयभोग त्यागनो, अन्याश्रय त्यागनो, दुःसंगसों मन सिथिल न होयवे देनो, कालदोषसों अविश्वास न होयवे देनो. विश्वास है सो ही आश्रय सिध्ध करिवेवारो है. सो यह सगरो कार्य जीव आपु करिवे समर्थ न होय तासों श्रीआचार्यजीकी सरन जानो अरु आपकी वाणी विचारिवेवारे स्वमार्गीयनकों संग करत रहनो. सो यह निरूपण शिक्षाश्लोकीके ''यदा बहिर्मुखाः यूयं भविष्यथ कथंचन तदा कालप्रवाहस्था देहचित्तादयोप्युत सर्वथा भक्षयिष्यन्ति'' अरु ''सर्वथा सेव्यः स एव विधास्यति अखिलं हि नः'' या अंशनको भाष्य है.

अठारहवो शिक्षापत्र विलक्षन है. जीवके स्वभावकों समुझायवे वामें लिख्यो है जो कालको कार्य जाने नाहीं है तासों जीव भगवत्कार्यमें प्रमाद अरु लौकिक कार्यनमें उतावली करे है. परि केवल उदरभरण करत रहनो उचित नाहीं है. सो निरानंद जानि प्रपंचकों भुलायके प्रभुनकों हृदयमें धारण करिके प्रभुसेवा न फलार्थ करनी न भोगार्थ न प्रतिष्ठाप्रसिध्धिके तां न कल्पित प्रकारसों न दुर्भावपूर्वक.
श्रीठाकुरजी–वल्लभ–विट्ठल–व्रजभक्तनकों परमतत्त्व जानने, जो नके तुल्य कोउ नाहीं. को श्रध्धावान स्वमार्गीय आयके पूछे तो वाहूकों यह ही उपदेश देनो, जासों वह भगवत्परायण होवे अरु प्रभु अपनेपे प्रसन्न होय. यामें शिक्षाश्लोकीके ''न लौकिकः प्रभुः कृष्णो मनुते नैव लौकिकं'' अरु ''सर्वभावेन सर्वथा सेव्यः'' या श्लोकांशनको व्याख्यान है.

उन्नीसवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो कराल कालमें दुःसंगसों सत्पुरुषनकी मति हू नष्ट होवे है. सो सत्संग, भगवद्दर्शन, व्रजवास सबसों हों रहित हों तोहू श्रीकृष्ण ही मेरे आश्रय हैं. यामें शिक्षाश्लोकीके ''विधास्यति अखिलं हि नः''को भाव विस्तार करिके कह्यो है.

अब बीसवे शिक्षापत्रमें सरन आये जीवकों कहा करनो अरु कहा न करनो यह लिख्यो है. सरन आये वासों

पहले किये दोषनकी चिंता न करनी, क्यों जो भगवन्नाम अरु सरन सर्वदोषनिवर्तक हू है अरु सर्वसंपादनक्षम है. सरन आवेपे असज्जन आपुनी निंदा करे सो मनमें न लानी. ब्रह्मसंबंध सरनसों हू अधिक दोषनिवर्तक है. सेवा हू दोष छुडायवेवारी है. गुणगान ज्ञानसों हू बलवान है प्रभुप्राकट्यमें प्रतिबन्धक दोषनके निवारणमें. विरह तो छिनमें दोषके समूहको नाश करि दे है. परि अविश्वास जाकों भयो ताकी को गति नाहीं. तासों थोरो जानिवेवारेनके आपातसुन्दर वचननकों सुनिके बुध्धि चलित न होन देनी. सो सेवा–सदाचार–धर्ममार्गस्थिति अरु वचननसों अविरुध्ध कृति बनाये रखनी. आचार्यवचनैकनिष्ठा बनाये रखनी. तदीयजनको संग करत सतत भावुक व्है रहनो, आन संगको छांड देनो. यामें शिक्षाश्लोकीके ''सेव्यः स एव विधास्यति अखिलं हि नः''को आशय समुझायो है.

क्कीसवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो सावधान रहनो. क्यों जो व्यावृत्त जीव होय वाकों सत्संग न मिलवेपे भाव सिथिल होयवेपे उह कर्मवत् क्रिया करिवे लग जाय है. तामें हू व्यवहारके कारण विक्षेप होवे हैं अरु व्यवहार सिध्ध न होयवेपे तो विशेषक्षोभ होवे है. व्यवहार सिध्ध न भयो तब गृहस्थी निभाते भये सेवा कैसे करनी यह सोच होवे है. सत्संगति अरु निवेदनानुसंधानके कारण दृढबुध्धिवारे अव्यावृत्त जीवको हू सावधान रहनो क्यों जो सत्संगसों पोषण न मिलिवेपै भाव सिथिल होय जाय है, अन्यथावार्ताश्रवनसों चित्त खिन्न होवे है अरु लोकमें बडे भगवदीय हैं यों प्रतिष्ठा होयवेपे देहव्यय अरु लोकनिष्ठा होय सके हैं. यामें शिक्षाश्लोकीके ''यदा बहिर्मुखा ... युष्मान्'' वचनमें सावधान रहिवेकी श्रीआचार्यजीने कही है सो ही बात कही है.

बासवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो भाव निधिरूप होयवेसों वाको सर्वथा रक्षन कीयो चाहिये. तासों भावसों विरुध्ध होय ताको त्याग करिके चित्तमें लौकिक न लानो. प्रभुमें अरु सत्संगमें स्नेह राखनो. सो शिक्षाश्लोकीके ''भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्च''को सार है.

तेसवे शिक्षापत्रमें बहिर्मुखताकी निवृत्तिके प्रकार बताये हैं जो सत्संग, सेवा, श्रीभागवतपाठ–श्रवन, निवेदनको स्मरण, कथा, नामग्रहण, शरणभावन, अष्टाक्षरकीर्तन, पंचाक्षरसों तदीयत्वभावन, वैराग्य, परितोष, कृष्णसन्निहितस्थिति, लौकिकक्लेशजन्य उदासीनता, पुत्रादिनमें अननुराग, गृहवित्तादिनमें अनासक्ति अरु तदीयनमें राग अवश्य किये चाहिये. परमदुर्लभ ऐसो कृष्णसेवानुकूल काल वृथा दुःखमें न खोवनो. सो शिक्षाश्लोकीमें बहिर्मुखतासों बचिवेकी कही है ताहीके लिये है.

चोबीसवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो सर्परूप काल भक्तिरूपामृत पीयो होय वाको ग्रास नाहीं करि सकत है. तासों कालकी चिंता छोडिके भक्तहितकर्ता निर्दोषपूर्णगुण प्रभुको दोष कबहू मनमें न लानो, दुःख हू न करनो. भगवदीयनसों मिलिके शिक्षा विचारत बुध्धिको सन्देह दूरि करनो. सो शिक्षाश्लोकीके ''विधास्यति अखिलं हि नः''को तात्पर्य है.

पचीसवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो भक्तिपथप्रवृत्तिको कारण एक कृपा ही जानि परे है. काहेतें जो श्रीआचार्यजी, श्रीभागवत, सर्वार्थज्ञापक श्रीसुबोधिनी आदि ग्रंथ इन सबनके विद्यमान रहते भये हू सब जन भक्ति पथपे प्रवृत्त होते नाहीं दीसे है. सो यह निरूपण शिक्षाश्लोकीके ''विधास्यति अखिलं हि नः''को आशय स्फुट करे है.

छब्बीसवे शिक्षापत्रमें दुःसंगसों भावरक्षा करवे तां लिख्यो है जो भगवद्स्नेह गुप्त राखनो, स्वमार्गीय भक्तनके संसर्गसों बढानो अरु गृहादिकमें मन न लगानो. सो तो शिक्षाश्लोकीके ''भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्च'' अंशके आशयतया जाननो.

सत्तासवे शिक्षापत्रमें हरिविस्मारक ४० दोष गिनाये हैं, जो धन, गृह, गृहासक्ति, लोकवेदमें प्रतिष्ठा, मनकी कर्मादिमें निष्ठा, स्वर्गादिफलाकांक्षा, लौकिकमें परमप्रीति, विरुध्धविषयेषणा, विषयासक्ति, भोजन,

देह–कुल–विद्याभिमान, देहपोषण, असत्संग, कृष्णानुच्छिष्टभक्षण, निवेदनानुसंधानत्याग, शरणविस्मृति, देवान्तराश्रय, देवान्तरप्रार्थना, फलार्थिता, भगवदनुसंधानरहित लौकिकी व्यावृत्ति, गुरुद्रोह, भगवदीयनसों स्वयंकों अधिक जाननो, अत्यन्तदेहसामर्थ्य, न्द्रियनको पोषण, गृहमें अभिरति, भार्यापुत्रादिमें मनोगति, कृष्णानुभावरहित देशमें सतत स्थिति, लोकलाभसों हर्ष अरु अलाभसों शोकग्रस्त होनो, स्वात्रत्र्यभावन, जीवस्वाभाविक हठ, अधिकार, पापरति, दुष्टपक्षपात, हृदयक्रूरता, अक्षमा, दीनजनोपेक्षा. नसों बचिवेके तां कृष्णदासकों सावधान व्हैके भगवन्मार्गमात्रस्थिति, तन्मार्गफलाकांक्षा, अन्यत्र विरक्ति, कृष्णगुणासक्तान्तरात्मता, स्वाचार्यशरण, विश्वास, अखिल परित्याग अरु भगवद्दर्शनोत्सुकता बनाये रखने चहिये. सो यह निरूपण शिक्षाश्लोकीके ''यदा बहिर्मुखा ... युष्मान्'' अरु ''सर्वभावेन ... अखिलं हि नः'' अंशनको भाष्य है.

अट्ठासवे शिक्षापत्रमें अपनी दीनताके आविर्भावपूर्वक प्रभुकी प्रार्थनाको प्रकार लिख्यो है. सो शिक्षाश्लोकीके ''सर्वभावेन सेव्यः स एव गोपीशः''को आशय है.

उनतीसवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो बुध्धिनाशसों विनाश कह्यो गयो है यासों बुध्धिरत्नको सत्संग–कृष्णस्मरण–शरणागतिसों गोप्य राखनो. सो नित्य सेवा, कथा, सत्संग अरु प्रसादको सेवन करत रहनो. यामें शिक्षाश्लोकीके ''यदा बहिर्मुखा यूयं ... सर्वस्वश्च''को ही विस्तार जानि परे है.

तीसवे शिक्षापत्रमें भक्तिके छह साधन गिनाये हैं, जो कृष्णसन्निहित तो देश, अरु सत्संगहेतुक काल, सर्वस्व द्रव्य, अभिमानवर्जित कर्ता, गुणलीलासमन्वित कृष्णनामराशि तो मन्त्र अरु कृष्णसेवा ही कर्म है. सो सर्व सत्संगसों सिध्ध होवे हैं. या सत्संगमें हू परन्तु चित्तदोष न उपजे तासों अदूरे विप्रकर्षे रहनो. यामें शिक्षाश्लोकीके ''भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्च''को आशय स्फुट कीयो दीसे है.

इकत्तीसवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो आधुनिक जीवनको परंपरया श्रीआचार्यजीद्वारा प्रभुने वरण कीनो है. तासों प्रभु तो पुष्टिस्थ हैं परि जीवको हित आचार्योक्त मर्यादामें स्थित रहवेमें है. तासों आर्ति राखनी परि प्रार्थना न करनी. सो आर्ति तो सत्संग, निवेदनानुसंधान, श्रीआचार्यवाणीविचार अरु कृपा होय तब ही होय सके है. भगवदीयनको संग दुर्लभ होय तो सरनभावन करत अष्टाक्षर जपने परि दुर्जनके मुखसों श्रवन न करनो. यामें शिक्षाश्लोकीके ''विधास्यति अखिलं हि नः''अंशकों समुझायो है.

बत्तीसवे शिक्षापत्रमें कैसे हृदयमें भगवदावेश नाहीं होय सकत है सो बतायो है, जो कामाविष्ट, क्रोधयुत आदि. तैसे ही कौन भांतिके हृदयमें भगवदावेश होय सो हू बतायो है, जो निष्प्रपंच, अचंचल आदि. यामें शिक्षाश्लोकीमें बहिर्मुख अरु कालप्रवाहस्थ चित्तकी बात कही है वाको भाष्य जानि परे है.

तैतीसवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो दैन्य भगवदिच्छानुकूल्यको साधन है परि अहंकार अरु मद वाके विरोधी है. तासों विनको परित्याग करनो. तैसे इन्द्रियनके दोष साधनपरायण व्हैके दूरि करने. अन्याश्रय अरु कामलोभादिदोषनको परित्याग करिके सरनागत होय रहनो. सो यह निरूपण शिक्षाश्लोकीमें बहिर्मुख कालप्रवाहस्थ न्द्रिय अरु अहंकारकी बात कही है वाको भाष्य है.

चौतीसवे शिक्षापत्रमें सर्वात्मभाव सिध्ध होयवेके तां कहा करनो सो लिख्यो है, जो दैन्य अरु आर्ति राखने, भगवानको संग करनो, दुःसंगसों डरपत रहनो, लौकिकाभिनिवेशसों मनकों बाहर निकासनो. वैराग्यसों काम, परितोषसों लोभ अरु दैन्यसों क्रोधकों बसमें लाने. सो शिक्षाश्लोकीके ''भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्च'' वचनको भाष्य है.

पैंतीसवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो आधिदैविकदुष्ट जीव प्रीतिशून्य अरु नीरस होय सो श्रवणादिसों हू तिनको सुधार नाहीं होय सकत हैं. तासों तिनकों आसुरी जानि त्यागने. सो यह हू ''भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्च''को भाष्य है.

छत्तीसवे शिक्षापत्रमें चिंता न करिवेकी कही है, क्यों जो चिंतातुर चित्तमें भगवत्स्थिति नाहीं होत है. सो हरिसरन होयके निवेदनानुसंधानातिरिक्त चिंतानको त्याग करनो. बहिर्मुख परिवारजननको प्रतिबंध हरुवे हरुवे दूरि करनो. यह हू भावके संरक्षणार्थ कह्यो है.

सडतीसवे शिक्षापत्रमें नित्य आपुनी निःसाधनताको भावन करिवेकी कही है, सो ''विधास्यति अखिलं हि नः''के आसयसों.

अडतीसवे शिक्षापत्रमें प्रभुमें चित्त राखिवेके तां तनुवित्तजा सेवा, निवेदनानुसंधान, सत्संग अरु दृढ विश्वास राखिवेकी कही है. पाखंडमें मति न जाय अरु चित्त शुध्ध रहे तदर्थ धर्ममार्गप्रवृत्ति करनी. श्रीआचार्यजीमें दृढ विश्वास राखनो. सो यह हू कालप्रवाहजन्य बहिर्मुखतासों भावके संरक्षणार्थ कह्यो है.

उनचालीसवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो हरिसेवा अरु वैष्णवसेवा प्रभुकों बस करिवेके साधन जानने. आदरसों पूर्वश्रुतार्थानुसंधान करिवेरूप सत्संगद्वारा प्रभुमें चित्त लगावनो. सो शिक्षाश्लोकीके ''सर्वथा सेव्यः स एव गोपीशः''को आसय है.

चालीसवे शिक्षापत्रमें लिख्यो है जो भाव होय तब ही निःसाधनता कामकी, नाहीं तो दोषरूपा है. सो शिक्षाश्लोकीके ''भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्च''को तात्पर्य है.

इकतालीसवे शिक्षापत्रमें वैष्णवकों कैसे रहनो सो लिख्यो है. जो लौकिक कार्य हू प्रभुसेवोपयोगार्थ करने. वामें पहले प्रभुको चिंतन करनो, लौकिकको नाहीं. प्रभुमें सुध्ध भाव राखनो, तामें चातुर्यको काम नाहीं है. प्रभु अंतर्यामि हैं. अनासक्त व्हैके आवश्यक लौकिक व्यय करनो. लौकिकसों भाव घटि जाय तासों भाववर्धक सत्संग सेवाके तां करनो. प्रभु पिताकी न्यां जीवके कल्याणकी चिन्ता करत ही आये हैं तासों जीवको पुनः चिन्ता न करनी. हरिदर्शनादिकी आर्ति राखत सेवा करनी. सो यह निरूपण शिक्षाश्लोकीके ''भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्च'' अरु ''सर्वथा सेव्य स एव विधास्यति अखिलं हि नः''को भाष्य है.

संक्षेपमें शिक्षाश्लोकीमें सूत्रात्मक रीतिसों कालप्रवाहसों बचिके दृढ विश्वाससों दुर्मति अरु दुर्भावसों बचिके बहिर्मुखतासों बचिके सेवा–सत्संग अवश्य करिवेकी कही है ताको ही शिक्षापत्रनमें विस्तारसों भाष्य करिके समुझा है.

।।बुध्धिप्रेरककृष्णस्य पादपद्मं प्रसीदतु।।